सम्पूर्णता वर्ष

सम्पूर्ण पवित्रता – 2

08.09.2014

1. **स्वमान** – मैं शिव-शक्ति हूँ....शिव की सजनी हूँ....सदा सुहागन हूँ....।

- (आप स्वयं से इस प्रकार बात करें) शुक्रिया मेरे परम प्रियतम् ! जो आपने मुझे अपना लिया, स्वीकार कर लिया....अब मेरा कुछ भी नहीं, यह तन-मन-धन सब कुछ आपका है....मुझे पता है आपको न्यारी सजनी ही प्रिय है....बस अब मैं देह सहित देह के सर्व संबंधों (बंधनों) से मुक्त हो एक आपके ही भरोसे रहूँगी....प्यारे प्रियतम्, मैं आपकी अर्धांगिनी हूँ....जो कार्य आपके हैं, वही कार्य मेरे हैं....मैं आपको विश्व परिवर्तन के परम पुनीत कर्तव्य में मन-प्राण से मदद करुँगी....।

2. **योगाभ्यास** –

अ. मैं पार्वती हूँ....अमरनाथ के सम्मुख बैठी हूँ....वे स्वयं मुझे अमरकथा सुना रहे हैं....इस नशे में स्थित होकर मुरली सुनें....।

ब. अमृतवेला शिव-साजन से आत्म-स्मृति का तिलक लें और पवित्रता, गुणों व शक्तियों का ताज पहनें। सारे दिन अपने साथ तिलक व ताज का श्रृंगार अनुभव करें....।

स. मैं शिव की शक्ति हूँ....शिव-साजन के बिना मैं अधूरी हूँ....मैं सदा उनसे कम्बाइंड हूँ....वे अपनी सर्व शक्तियों से मुझे भरपूर कर रहे हैं....।

3. **धारणा** – **एकव्रता**

- सदा सुहागन अर्थात् एक शिव साजन, दूसरा ना कोई।
- सदा सुहागन के नयनों में , मुख में साजन की सूरत व सीरत समाई हुई होती है।
- एकव्रता आत्माएँ ही शिव साजन को प्रिय हैं।

4. **चिंतन** –

- एकव्रता सजनी की विशेषताएँ लिखें ?
- शिव साजन से प्राप्तियाँ ?
- शिव साजन की प्रिय कैसे बनें ?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! इस संगम पर हम सभी आत्मा रुपी सजनियों को ऐसा साजन मिला है जो सदा अविनाशी है। अविनाशी साजन की हम सजनियाँ सदा सुहागन हैं। सदा सुहागन अर्थात् सम्पूर्ण प्यूरिटी, मंसा में भी किसी विकार का अंश न हो। संकल्प मात्र भी, स्वप्न मात्र भी किसी देहधारी आत्मा तरफ झुकाव हुआ तो सदा सुहागन के लिए महापाप गिना जाता है। सदा सुहागन सदा तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से सुनूं, तुम्ही से खाऊं....इसी स्टेज पर रहती।